चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	13-9-24	3	3-6

हकृवि में कार्यशाला का आयोजन, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग

कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण अधिकारी किसानों को करें जागरूक : वीसी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी और बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि और किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास की फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

कार्यशाला में उपस्थित कृषि अधिकारी।

इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से किसानों को प्रत्येक फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवानी भी सुनिश्चित की जाए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	13-9-24	4	2-5

'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर हकृवि में कार्यशाला आयोजित, कृषि अधिकारियों ने दी कई जानकारियां

गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में आई कमी

हिसार, 12 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगासकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करनें पर भी जोर दिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आर.पी. सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। इस एक दिवसीय कार्यशाला में हकृवि एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	13.9.24	5	3-6

कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक व कृषि विभाग किसानों को करें जागरूक : प्रो. काम्बोज

'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर हकृवि में कार्यशाला आयोजित, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए।

हिसार, 12 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया।

उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से किसानों को प्रत्येक फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवानी भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कार्यशाला में अधिकारियों एवं किसानों के साथ-साथ पेस्टीसाइड विक्रेताओं को भी प्रशिक्षण देने का आह्वान किया। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है।

उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा, ताकि किसानों को भी जागरूक किया जा सके। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव ने कार्यशाला में धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में हकृवि एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	13.9.24	3	1-5

कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण

■ गुलाबी सुंडी व बरसात का प्रभाव, कृषि वैज्ञानिकों ने किया मंथन

हिसार (सच कहूँ न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं।

चलाया जाएगा जागरूकता अभियान

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा। इस एक दिवसीय कार्यशाला में मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डॉ. रमेश यादव, हकृवि एवं कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के प्रदेशभर के अधिकारियों ने भाग लिया।

अब हर सप्ताह जारी होगी एडवाइजरी

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है।

किसानों की समस्याओं का समाधान खेत में जाकर करना चाहिए

किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रिंट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से किसानों को प्रत्येक फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध करवानी भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कार्यशाला में अधिकारियों एवं किसानों के साथ-साथ पेस्टीसाइड विक्रेताओं को भी प्रशिक्षण देने का आह्वान किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	13-9-24	4	3-6

20 दिन कपास के लिए महत्वपूर्ण, किसानों को करें जागरूक

जागरण संवाददाता • हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फीडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डा. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है। अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइजरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डा. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डा. करमल सिंह ने कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा, ताकि किसानों को भी जागरूक किया जा सके। इस दौरान मानव संसाधन प्रबंधन निदेशक डा. रमेश यादव आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	13.9.25	9	2-8

'कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर हकृवि में कार्यशाला आयोजित

कपास के लिए आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक किसानों को करें जागरूक

- प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग
- गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में आई कमी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्य अतिथि रहे।

हिसार। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने किसानों की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है।

कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने कार्यशाला में सभी का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों को उन्नत किस्म का बीज उपलब्ध करवाने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की बीमारियों के बारे में कृषि विभाग के अधिकारियों को जागरूक किया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	13-9-24	3	1-2

कृषि विभाग किसानों को करे जागरूक : प्रो. कांबोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी और बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व एचएयू के कपास अनुभाग की ओर से आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बतौर मुख्यातिथि संबोधित करते हुए कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फीडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। एचएयू एवं कृषि विज्ञान केंद्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। संवाद

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	13.09.2024	---	--

कपास के आगामी 20 दिन महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक, कृषि विभाग किसानों को करे जागरूकः प्रो. बी.आर. काम्बोज

कपास में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर हकृवि में कार्यशाला आयोजित, प्रदेश के कृषि अधिकारियों ने लिया भाग

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं।

उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कृषि वैज्ञानिक एवं अधिकारी खेतों में जाकर लगातार फिडबैक लेने के साथ-साथ एडवाइजरी, मौसम पर नजर व प्रचार-प्रसार के माध्यम से किसानों को जागरूक करें। हकृवि एवं कृषि विज्ञान केन्द्रों पर किसानों का अटूट विश्वास है। उन्होंने देसी कपास का बीज तैयार करने के लिए कृषि अनुभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	12.09.2024	---	--

'कपास में गुलाबी सुंडी व बरसात के प्रभाव' विषय पर हकृवि में कार्यशाला आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मानव संसाधन प्रबंधन निदेशालय में 'कपास की खेती में गुलाबी सुंडी तथा बरसात के प्रभाव' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, हरियाणा व हकृवि के कपास अनुभाग द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि के तौर पर उपस्थित रहे।

फोटो वरण कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यशाला को संबोधित करते हुए।

कुलपति ने किसानों कि समस्याओं का समाधान सुनिश्चित करने के लिए हकृवि के वैज्ञानिकों एवं कृषि तथा किसान कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपसी तालमेल के साथ कार्य करने का आह्वान किया। गुलाबी सुंडी के प्रबंधन के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी के बारे में उन्होंने किसानों को जागरूक करने के लिए गांवों में प्रदर्शन प्लांट लगाने के साथ फसल चक्र में भी बदलाव करने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जहां भी भूमि में पोषक तत्वों की कमी है, वहां पर किसान कपास के साथ दलहनी फसलें उगा सकते हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का समाधान उनके खेत में जाकर करने पर भी जोर दिया। कुलपति ने कहा कि कपास कि फसल के लिए आगामी 20 दिन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. आरपी सिहाग ने कहा कि कपास फसल की समस्याओं के समाधान एवं उत्पादन में बढ़ोतरी को लेकर गत तीन-चार वर्ष के दौरान हकृवि एवं विभाग के अधिकारियों ने आपसी तालमेल के साथ संगठित होकर कार्य किया है। गुलाबी सुंडी एवं उखेड़ा की समस्याओं से निपटने के लिए गांव में प्रदर्शन प्लांट आयोजित करके किसानों को जागरूक किया गया है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने कहा कि कपास फसल के लिए 15 दिन की एडवाइरी के स्थान पर इसे 7 दिन कर दिया गया है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा किए जाने वाले अनुसंधानों की जानकारी किसानों को शीघ्र उपलब्ध करवाई जा रही है। कुलसचिव डॉ. पवन कुमार ने कहा कि कपास एक आमदनी वाली फसल है। उन्होंने कहा कि गत वर्ष के मुकाबले इस वर्ष गुलाबी सुंडी के प्रकोप में कमी आई है।